गीता भगवान जी का प्रेम

- सच्चा गुरु अपने भक्त को अमन और अशरीर (देह रहित) करके, क्षण में तीनो तापो से छुड़ा देता है।

- गुरु संशय में पड़े हुए तालिब (शिष्य) के सभी ख्याल छीन कर अजीब (ब्रह्म) ज्ञान से उसे अजीब (ब्रह्म) पद बक्शता है।

- करो आठ ही पहर समाधि, सीखो योगी से उस्तादी।

- मन को गुरु के विचारों से मारना यही अभ्यास रात–दिन चालू रखना है।

- तुम शिवोहम् शैतान को भी पैदा करने वाले हो तो फिर डर काहे का। मन बेचे सतगुरु के पास, तिस सेवक के कारज रास।

गीता भगवान जी का प्रेम

- केवल पूरण जिज्ञासु हो तो सिर उतार कर रखे। शीश देने से ही ईश मिलता है।

- आत्मा के सिवाय दूसरी बात करे तो मोचरा (जूता) लगाओ। अपने को भी मोचरा लगाओ, यदि तुम आत्मा के सिवाय कुछ बोलो तो।

- प्रेमी को नशे में जहान देखने में नहीं आता है। माशूक का ध्यान करके खुद माशूक बन जाता है।

- वो खुद आशिक, वो खुद माशूक सदा भरपूर रहते है।

- सब तेरी मौज है। मियां मरे तो भी हलवा खाओ, बीवी मरे तो भी हलवा खाओ।

गीता भगवान जी का प्रेम

- हम आशिक उसी सनम के हैं, जो दिलबर सबसे आला है, जिसने हमको जी बक्शा, जिसने हमको पाला है।

- अरे आशिक, उम्र थोड़ी है सफर लंबा है इसलिए जल्दी ब्रह्म की आग में पतंगे की तरह कूद पड़ो तो जगदीश की जोत का जलवा देख सको।

- परमात्मा का स्वरूप देखना–यानि हर एक में आत्मा देखना–यह है दर्शन, दूसरा कोई भी दर्शन नहीं है अपने को आत्मा समझो, फिर हर एक को आत्मा देखो, बाहर से शरीर भुलाओ।

- जीते हुए गुरु से फायदा पड़ेगा, बाकी मरे हुए गुरुओं की किताब पढ़ोगे या बड़ाई करोगे तो कुछ हासिल नहीं होगा।

- जीते हुए गुरु के कर्म देखते हैं, मरे हुओं की प्रशंसा करते है–यह है दुनिया की रीत।

गीता भगवान जी का प्रेम

- गुरु हैं हंस, जो दूध पानी अलग करके, दूध तुम्हें पिलाता है, बाकी पानी फेंक देता है।

- अनुभव का ज्ञान उज्जवलता की वाणी, यह गत विरले जानी। आत्मा का निश्चय गुरु मुख से नहीं किया, तो मानो खुद ही आत्मघात किया अपना।

- मनुष्य मरने के लिए नहीं आया है, क्योंकि वह पैदा ही नहीं हुआ है तो मरेगा कैसे? जो पैदा हुआ समझेगा वह मरेगा।

- मन की न सुनना ही है मन को मारना।

गीता भगवान जी का प्रेम

- जो अपने में ही अपना लाल ढूंढे कि मैं ही तो हूँ, मेरे सिवाय दूसरा है ही नहीं, उसके विकार एक धक्के से ही नाश हो जायेंगे।

- तुम निराकार आत्मा हो, बाकी ख्याल कौन सा करते हो? काहे का ख्याल करते हो? आत्मा में लीन होकर ख्यालों से खाली हो जाओ।

- विश्वास ही तालिब को अगम देश में पहुँचाने वाला उड़नखटोला है। पूरण सेवक ही पूरण गुरु के पद पर पहुँच सकता है।

गीता भगवान जी का प्रेम

- ज्ञानी कसाई, बकरा और तलवार एक ही आत्मा समझता है। त्रिपुटी में त्रिपुटी रहित है। कौन मरा है और किसको मारा ? दोनों ही आत्मा हैं, तो दु:ख काहे का? सब मेरा ही खेल है। संकल्प मय सृष्टि है।

- आत्मा रूपी जोत तुम्हारे साथ है, तो भी मन रूपी अंधेरे में गोते खा रहे हो। बिना पानी के गोते खा रहे हैं, बिन आग जले संसारा।

- विकार सहित देह भुलाओ, कि मैं निर्विकारी हूँ आत्मा। मुझ में विकार नहीं है, तभी विकारों से पिंड छूटेगा।

- मैं तुम्हारे पास, तुम्हारे ही अंदर आत्मा रूप में विराजमान हूँ। आखिर अपने में ही टिकना है। भगवान मिला तो मैं खुद भगवान हो जाऊँ, तभी भगवान का आना सफल हुआ। यदि तुम मेरी तरह नहीं हुए (बने) तो मेरा आना ही व्यर्थ हो गया।

गीता भगवान जी का प्रेम

- ध्यान, भगवान को अलग समझकर किया जाता है। ज्ञान से जीव ब्रह्म का मिलाप, आत्मा-परमात्मा का अभेद होता है। इसलिये ध्यान से बेहतर है ज्ञान। ज्ञान है अपने स्वरूप की पहचान कि मैं वो खुद खुदा हूँ, मेरे सिवाय दूसरा कोई भगवान नहीं है।

- पुरुषार्थ का अर्थ हैं शांत हो जाओ और अपने को जानो कि मैं वही हूँ। उसमें कुछ भी करना नहीं पड़ता है, अपने में विश्वास आत्मा का रखना यही परम आनंद और अंतिम पुरुषार्थ है।

- कल खेल पर नज़र थी कि ऐसा हो रहा है, ऐसा क्यों हुआ, पर आज पर्दे पर नज़र है कि है ही ब्रह्म। खेल केवल मेरे अज्ञान के अंधेरे के कारण दिख रहा था। कल समझ रहा था कि संसार भगवान ने बनाया पर आज जाना कि जगत बना ही नहीं, परमात्मा ही है जो अनेक हो कर प्रतीत हो रहा है। वह परमात्मा मैं ही तो हूँ जिसके संकल्प से यह सृष्टि खड़ी है। गुरु की कृपा से क्या से क्या बन गया।

गीता भगवान जी का प्रेम

- गुज़रने से पहले ही गुज़रा हुआ समझने वाला कभी होनी में नहीं जायेगा।

- ब्रह्मचर्य कोई जिस्मानी नहीं है। जिस्म को वश में करना तो ब्रह्मचर्य की शुरुआत है पर निज (pure) ब्रह्मचर्य माना ख़्यालों की मलीनता से दूर रहना। ब्रह्म के सिवाए दूसरा ना देखना। ब्रह्मचर्य की तपस्या आख़िर सुखों की खान बन जाती है।

- इच्छा को रोकना भी एक इच्छा है। मुझे इच्छा ना हो यह भी इच्छा ही है। यह सहज वैराग्य से इच्छा ही नहीं हो यह ज्ञान है। इच्छा तो तभी होती है जब किसी वस्तु को सत्य और अच्छा (मन पसंद) समझते हैं पर मृगतृष्णा के जल की इच्छा कभी नहीं होगी। क्योंकि एक बार निश्चय हुआ कि यह जल है ही नहीं, है ही रेत, तो लोटा लेकर कैसे जाएँगे, चाहे कितनी भी प्यास हो। मछली को पानी में तृप्ति मिलेगी ना कि शहद में। इसी प्रकार मन को शांति भगवान से आएगी ना कि माया से।

गीता भगवान जी का प्रेम

- जीवन क्या है? एक छिपी हुई शक्ति अपने स्वरूप में ज़ाहिर होने के लिए लगातार कोशिश कर रही है पर उसकी बाहरी प्रकृति ने उसे दबा दिया है। उस लड़ाई या कोशिश (पुरुषार्थ) का नाम ही जीवन है।

- दया है ही तुम्हारी आत्मा में। बाहर कहीं से दया नहीं होगी। तुमने अपनी आत्मा को पहचाना तो अंदर में ही तुम्हें आशीर्वाद मिलता है।

- सच पाने के लिए नाम रूप की पूजा छोड़नी चाहिए।

- तुम ही एक निराकार से साकार होकर आए हो। यह समझ-अद्वैत मत की ही सच है।

गीता भगवान जी का प्रेम

- घर बैठे ही क्रम करो और क्रिय्मान कर्म ना बनाओ, यही सच्चा सन्यास है।
- मैं का लोप होना चाहिए। लोक संग्रह (दूसरे के हित में) के लिये रहो, लोका रीत के लिये नहीं। उत्तर प्रशन करने के सिवाए ज्ञान समझ में नहीं आएगा।
- गुरु गूँगा, शिष्य बहरा, लंगड़ा चढ़े पहाड़, अंधा देखे नूरानी नूर को।
- जहाँ अज्ञानी सोया पड़ा है आत्मा करके वहाँ ज्ञानी जागता है।
- ज्ञानी सारी सृष्टि से अलविदा करके बैठता है कि अपनी मौज से मैं घूमने, सैर करने आया हूँ।

गीता भगवान जी का प्रेम

- क्यों नहीं कहते की मैं शाहों का शाह हूँ। तुम्हारी सूक्ष्म इच्छा तुमसे यह नहीं कहलवाती है।

- एक भी वस्तु दुनिया में गुरु से अधिक प्यारी है तो अभी भक्त कहलाने के लायक भी नहीं हो।

- ज्ञानी चंदन है जिसे कामना का कीड़ा छू भी नहीं सकता। गुरु से प्रीत चाँद और चकोरी जैसी होनी चाहिए। जितनी हमारी चाहना है, श्रद्धा है उतना गुरु का प्रेम है तुम्हारे साथ।

- जब किसी आकार में फँस जाते हैं, तो निराकार को भूल जाते हैं।

divinepramilabhagwan.com

गीता भगवान जी का प्रेम

- वृक्ष पाताल में अपनी जड़ पक्की करके बाकी फल फूल सबके आगे रखता, भेट करता है। ऐसे हमें भी अपनी जड़ पाताल तक पहुंचानी है यानि पक्की निष्ठा में रहना है। बाकी फल फूल, ज्ञान प्रेम सबके आगे भेट करना है।

- भगवान से वे मिलते हैं जो मन की तपस्या करते हैं।

- अब आश्चर्य यह लगता है कि किसी भी बात का आश्चर्य नहीं होता है। अब किसी के लिए या किसी भी बात के लिए कोई शिकवा, शिकायत नहीं अंदर से । किसी भी बात की फ़िक्र नहीं तो मुख पर उसका ज़िक्र भी नहीं।

गीता भगवान जी का प्रेम

- श्रद्धा, विश्वास और सच्चा प्रेम होना चाहिए। तुमने अभी भी मुझे पूरा नहीं पहचाना है जो बहन करके पत्र लिखा है। मैंने जिन्हें भी ज्ञान सुनाया है उनमें से किसी ने भी मुझे बहन करके नहीं समझा है। पर भगवान करके जाना है। जब तक तुम उपदेश देने वाले रहबर को पूर्ण भगवान की दृष्टि से नहीं देखोगे तब तक फायदा भी उठना ही होगा। इन चम की आँखों से देह ही दिखाई देगी कि यह लड़की है, औरत है, पर दिव्य नेत्र चाहिए जो साधारण स्वरूप में आए हुए भगवान को पहचान सके । जब तक मुझे भगवान करके नहीं देखोगे, तब तक तुम्हें भी आत्मा का निश्चय नहीं होगा। मुझे माना देह नहीं। देह से दृष्टि हटा दो, इस झूठे जगत से भी दृष्टि हटा दो, तो ईश्वर ही ईश्वर नज़र आएगा। शरीर से ऊपर चढ़ जा।

गीता भगवान जी का प्रेम

- अरे आवाज़ सुनो तो अपने अंदर की सुनो जो तुम्हें सतर्क करती है गलती निकालों तो अपनी, अपनी गलती निकालने से तुम साफ हो जायेगा भगवान के करीब हो जायेगा।

- यदि हमारा ख्याल हमें न गिराये तो दुनिया में कोई ऐसी हालत नहीं जो हमें उलझा सके। अपने सिवाय बाहर का आनंद नहीं है। मन जब स्थिर हो जाये तो एकदम आत्म साक्षात्कार हो जाये। देर है केवल अभ्यास की।

- जब कर्म देखना बंद करो तो गुरु को बुलाना, नहीं तो व्यर्थ ही मेरा और अपना समय बर्बाद नहीं करो। कर्त्तापने के जहरीले सांप से छूटो।

- तुम गालियों के बिना उन्नति नहीं कर सकते दुश्मन की दुआ डराती है साजन की गालियाँ भी सुहाती हैं। गुरु को नहीं समझाओ कि गुरु मेरे को प्यार से समझाओ!

divinepramilabhagwan.com

गीता भगवान जी का प्रेम

- जब तक गुरु हमें याद नहीं करता, हम उसकी नज़र में नहीं हैं, तब तक हमारे भीतर प्रेम और ज्ञान उत्पन्न नहीं होगा!

- तुम भी जब तक देह में हो तब तक नर्क में हो। गुरु की मेहनत आबाद करनी है या बर्बाद? इसलिये गुरु को शरीर नहीं आत्मा समझो!

- भगवान ने किसी का भी नरम और सख्त हृदय नहीं बनाया है पर भगवान के राज को न समझने के कारण दुखी सुखी होते हैं। इस राज को समझना है। दुनिया के लोग दुख सुख में तड़पते हैं ज्ञानी कैसे मुक्त हुआ बैठा है।

- विश्वास करामातों की करामात है। अविश्वासी गिरता है, पर विश्वासी पहाड़ को बोले हट जा, तो हट जायेगा।

गीता भगवान जी का प्रेम

- जोत से इक जोत को सद्गुरु ने पैदा कर दिया। दादा की जोत आज हर शहर में जल रही है। जिस जिस ने जितना पहचाना उतना पाया। जो ओरे सो अर्जु।

- गुरु का खजाना तुम्हें काम नहीं आयेगा। ज्ञान जो तुमने हासिल किया होगा वही काम आयेगा। विद्या वह जो कंठ, धन वह जो गाँठ में हो! तुम कमाया हुआ जेब से खर्च कर सकोगे। गुरु की कमाई तुम्हें काम नहीं आयेगी।

- जो अपने को पहचानने आया वह भले आया, सैर करने आया भले आया। साधु- संगत स्वर्ग के समान है ऊपर न कोई स्वर्ग है। भोग- दुनियां के नर्क समान है ऊपर न कोई नर्क है। स्वर्ग है सत्संग, बाकी जो दुनियाँ के मजे बैठकर लूट रहे हैं सब नर्क बैठे भोग रहे हैं।

गीता भगवान जी का प्रेम

- तू है सागर, मन है लहर फिर कभी लहर भी सागर को डुबो सकती हैं? शेर से निकली हुई गर्जना कभी शेर को डरा सकती है? सूर्य से निकली किरणें कभी सूर्य को जला सकती हैं? अग्नि से निकली हुई चिंगारियां कभी अग्नि को जला सकती है? फिर आत्मा से पैदा हुआ मन आत्मा को डरा सकता हैं? होवे प्रलय उस विश्व का, मुझको न कुछ भी त्रास है। ब्रह्मा विष्णु शिव का होता नाश है, पर मेरा न होता नाश है।

- जिस प्रकार छतरी से सूर्य की तपन को रोक सकते हैं उसी प्रकार आत्मा समझने से सभी विकार निकल जाते हैं।

- पदार्थो में कोई सुखी नहीं हैं, पर इच्छाओं की निवृति में ही सुख आनंद हैं। अपने तीव्र पुरुषार्थ से ही ये ज्ञान पा सकेंगे। जो आज मुक्त नहीं हुआ वह फिर कभी नहीं होगा।

divinepramilabhagwan.com

गीता भगवान जी का प्रेम

- हर एक कंजूस हैं पर गुरु दातार हैं।

- शास्त्रों से अक्ल और होशियारी बढ़ेगी, गुरु के पास अक्ल और होशियारी जाए। इश्क में गुम होता जाएगा। रेशम के धागे जितना पहले प्रेम गुरु से होता है फिर सूत के धागे जितना फिर रस्सी जितना फिर पक्का रस्सा जो कभी भी टूटेगा नहीं।

- सब कुछ हुकुम के अंदर होता है चाहे बेटा मरे, चाहे बेटी भाग जाए। चाहे विश्व का नाश हो जाए, तो भी मैं जैसा हूँ जो हूँ सो ही हूँ। मेरी दिल रत्तीमात्र भी हिले नहीं क्योंकि मेरे में जगत बना ही नहीं है न ही जगत की उत्पत्ति है न ही नाश हैं केवल मैं ही मैं हूं। हर वक्त हंसी हर वक्त खुशी हर वक्त अमीरी है बाबा, जब आशिक मस्त फकीर हुआ फिर क्या दिलगिरी है बाबा।

divinepramilabhagwan.com

गीता भगवान जी का प्रेम

- हल्के होकर भगवान के पास पहुँचेंगे। एक भी ख्याल रखा तो भारी हो जाओगे, भगवान से दूर हो जाओगे। खयाल छोड़कर बेख्याल हो जाओ। आत्मा में कोई ख्याल नहीं बनता है। एक बार सच्चा वैराग्य लेकर फिर अपनों-परायों में एक ही आत्मा देखो।

- सतो, रजो, तमो ये तीनों गुण है शरीर में। पर तू आत्मा है इन तीनों गुणों से नियारा त्रिगुणातीत। शरीर से ऊपर चढ़ जा, चढ़ता जा, चढ़ता जा, तेरे मन को कोई भी शक्ति रोकने वाली नही हैं। आत्मा सबसे ऊपर हैं। सबमें होते हुए भी नित न्यारा। ऐसा तुम हो जाओ फिर दृष्टा होकर बैठकर खेल देखो।

गीता भगवान जी का प्रेम

- आशिक के कहे जाते हैं जिन पर वह आशिक हुआ। वे ही आशिक बदलकर माशूक हुए। भगवान अर्जुन को कहता है कि तुम मुझे परम प्यारे हो क्योंकि तुमने मुझ में श्रद्धा रखी है मुझे दुनियाभर में सिद्ध किया है कि, यह भगवान है। एक साधारण स्वरूप में विश्वास रखना कि यह भगवान है यह कठिन से कठिन बात है। तुमने भी ऐसा विश्वास मुझमें रखा है तो तुम मुझसे भी बड़ी हो। भगवान को पहचानने वाला तो भगवान से भी बड़ा होता है।

- सच्चे इश्क़ के साथ ही सच्ची समझ (wisdom) यानी अक्ल आती है और उससे ही शुक्र और सब्र आता है। जब वक्त है तब तक अपने लिए ऐसा ख़ज़ाना इकट्ठा कर लो जो हमेशा के लिए तृप्त कर दें। काम ऐसा कीजिए जो अल्लाह आप बनीजिए। तुम्हारा सच्चा प्रेम मुझे पहुंच रहा है वायदा किया है, तुम्हारी डोर मुझे खींच रही हैं। वायदा किया है तो जरूर निभाऊंगा विश्वास करो।

गीता भगवान जी का प्रेम

- स्याणप (समझदारी) होशियारी से अलग तरह की है। ज्ञान के बाद समझदारी आती है पर होशियारी जाती है। होशियारी है देह में समझदारी है आत्मा की ज्ञान की। ज्ञानी दुनिया में सयाना होकर रहता है पर होशियारियाँ सब दुनिया की भुलाकर मूर्खों की तरह अज्ञानियों के आगे रहता हैं।

- अज्ञानी दौड़ता है माया की ओर जिज्ञासु दौड़ता है गुरु की ओर, सतगुरु कहाँ दौड़े जो खुद जहां-तहां है। सच्ची तरह से निष्काम केवल भगवान हो सकता है। उससे ही पूरा (Satisfaction) मिल सकता है सबको।

- गुरु से ज्ञान के बारे में बहस बंद करके गुरु वाक्य सत्यम करके उठाओ। ज्ञान भी बहस से सिद्ध नहीं होगा पर श्रद्धा रखने से एकदम अंदर छप जाएगा। Tape recorder की तरह। आत्मा के निश्चय रूपी एक अक्षर भी काफी है शास्त्रों के मनों से। अनुभव का एक अक्षर अधिक है। अपने को गर्क (विलीन) करते जाओ।

divinepramilabhagwan.com

गीता भगवान जी का प्रेम

- चाह फकत इक दिलबर की, और किसी की चाह नहीं, हम राह उसी से रखते हैं और किसी की परवाह नहीं।

- संत कृपाल कृपा करे तो संत का संग निंदक भी तरे। जो भगवान नहीं कर सकता वह गुरु कर सकता है ज्ञानी चंदन है जिसे कामना का कीड़ा छू भी नहीं सकता। गुरु से प्रीत चांद और चकोरी जैसी रखनी चाहिए। जितनी हमारी चाहना है, श्रद्धा है, उतना गुरु का प्रेम है हमारे साथ।

- ज्ञान से भी ऊपर विज्ञान है। गुरु के जीवन को बैठकर देखना-पहचानना यह विज्ञान है। जब तक गुरु का आदर्श सामने नहीं रखा है तब तक तुम्हें ज्ञान नहीं होगा। ज्ञान केवल सुनना नहीं है। पर खुद को प्रेम में रंग दे, गुम हो जाए, प्रेम में ही गुम होगे। ज्ञान से भगवान को जानोगे पर प्रेम से तो खुद भगवान का रूप हो जाओगे।

गीता भगवान जी का प्रेम

- गुरु जीता - जागता भगवान है, निराकार है उसे प्रेम करने से अंदर की तृप्ति मिलती है। गोपियां अपने संबंधियों को छोड़कर कृष्ण को प्यार करती थीं बोलती थीं हमारे पति, बच्चे मरणशील हैं हार्ट फेल हो जाएंगे पर तुम तो हो अविनाशी, अमर अजन्मा सच्चे पति परमात्मा। इसलिए तुम्हारे से हमारा सच्चा प्यार है। कृष्ण को बोलीं कि, तुम अवतार लेकर कभी - कभी आते हो पति बेटे तो चौरासी जन्मों में भी मिले थे वे ही जनम - मरण के चक्कर में आए। तुमसे प्यार करके हम भी अजर - अमर हो जाएंगे।

- मरे हुए के मुकाम में जीते जी मरना, पैर रखकर कहीं गर्दन बचाने की कोशिश न करना, गुरु को न ही शर्मिंदा करना, न ही अपने को लजाना (शर्मिंदा करना) समझ-समझकर धीरे-धीरे कदम बढ़ाना, ये बात बड़ी कठिन है हंसी - मजाक नहीं समझना। हाथी अगर सपने में भी शेर का दर्शन करेगा तो फिर कहीं सोएगा ऐसे शेर गुरु के मिलने के बाद 'अंख भी कदी न झपके, दीदार करदे - करदे।'

गीता भगवान जी का प्रेम

- सूर्य में अंधेरा नहीं है ऐसे तुम्हारे में अज्ञान नहीं है। तुम जोत स्वरूप हो। बादल सूर्य को थोड़े समय के लिए ढककर जाते हैं उसके भी तुम साक्षी हो। तुम कहते हो कि मुझे अज्ञान ढककर गया है मैं मोह में आ गया हूं, मेरी बड़ी इच्छाएं हैं। तुम मन नहीं हो। मन से हर वक्त जुदा होकर रहो। सच्चा त्याग है कि जो तुम्हारा मन चाहे वह त्यागकर दिखाओ और जो नहीं चाहता है उससे प्रेम रखो। प्रिय और अप्रिय में सम रहो। यह मैं चाहता हूं यह मैं नहीं चाहता हूं यही बंधन है मुझे कुछ चाहिए ही नहीं फिर मैं क्यों झुकूँ यहां निरिच्छा बराबर हुए पर अभिमान नहीं गया। मुझे कुछ भी नहीं चाहिए तो भी मैं नम्रता करूंगा वापसी में चाहे गालियां, लानतें मिलें। भगवान में विश्वास कोई अंधविश्वास नहीं है वह खुद में विश्वास है।

divinepramilabhagwan.com

गीता भगवान जी का प्रेम

- तुम्हारे जैसा हुआ न होगा। जवानी में जिसे इस जगत के पदार्थ और भोगों से वैराग्य आता है उसके जैसा अति भाग्यवान तो संसार में कोई विरला होगा। बालकपन में यह ज्ञान होना सोने के बराबर जवानी में चांदी के बराबर बुढ़ापे में तांबे के बराबर नहीं तो धूल के बराबर यह मनुष्य है।

- तुम्हारे जैसा हुआ न होगा। जवानी में जिसे इस जगत के पदार्थ और भोगों से वैराग्य आता है उसके जैसा अति भाग्यवान तो संसार में कोई विरला होगा। बालकपन में यह ज्ञान होना सोने के बराबर जवानी में चांदी के बराबर बुढ़ापे में तांबे के बराबर नहीं तो धूल के बराबर यह मनुष्य है।

- भगवान ने कहा है, मुझको भी सुहाता है ये बंधन कभी-कभी। सो तुम्हीं निराकार, साकार होकर शरीर के बंधन में आई हो पर फिर भी मायापति हो, शरीररहित हो। Man is image of God. दुनिया की जिसको चाह नहीं राह में उसके रूकावट नहीं। मुझे बंधन काटना है यह चिंतन नहीं करना है। पर मैं मुक्त हूं,आत्मा हूं यह निश्चय करना है।

गीता भगवान जी का प्रेम

- गुरु वाणी है, जिनके मुख से सत्य परमात्मा की वाणी निकले, वही गुरु है, भगवान है। जिसके मिलने से तुम्हें असली घर का पता मिले, सच्चा आनंद मिले, वही भगवान है। भगवान कोई मुरली या मुकुट पहनकर नहीं आएगा, किसी भी रूप में आए केवल तुम पहचानो। ना जाने किसी भेष में बाबा मिल जाएं भगवान रे।

- गुरु इंसाफ करने वाला जज है, अंधे मोह वाली दया नहीं करता है। उसको तुम कठोर दिल वाला समझते हो यही पाप है, गुरु जैसा दयावान न कोई हुआ है न होगा। जब तक कोई बात नहीं हुई है, तब तक उसके पहले उसका खयाल करना भी पाप है। निराकार पर विश्वास रखो, वो तुम्हें कभी नहीं छोड़ेगा।

गीता भगवान जी का प्रेम

- पारस के छूने से जो लोहा सोना हो चुका है वह फिर लोहा नहीं होगा ऐसे ही एक बार कोई गुरु के मुख से निश्चय करके उठा कि 'मैं ब्रह्म हूं, मुक्त hun' वह फिर देह के बंधन में आ ही नहीं सकता क्योंकि मुक्ति कोई पराई चीज नहीं है जो छिन या लुट जाएगी यह तो हमारा अपना आप असली रूप है।

- भगवान में विश्वास से अधिक अपने में विश्वास रखो। पूरे ब्रह्म की शक्ति तुम्हारे में है। तुममें से एक - एक यदि सच्ची बने तो पूरी दुनिया को हिला सकती है। मर्दों का शरीर भगवान ने पट्ठा (Strong) और ताकतवर (शक्तिशाली) इसलिए बनाया है क्योंकि उन्हें मेहनत मजदूरी करके कमाना है पर तुम लोगों का नाजुक शरीर है परमात्मा के लिए, भगवान की सेवा के लिए। अंदर की शक्ति तुम लोगों में है, जो तुम्हारे शुद्ध विचारों से निकलकर बाहर आएगी।

गीता भगवान जी का प्रेम

- दुनिया में जीता-जागता गुरु ही भगवान है। गुरु कहता है हट जा, तो हट जाओ। उसके वचन पर खुद को चलाओ। भगवान के सहारे हलचल होती है। पर भगवान बिल्कुल हलचल में नहीं है।

- भगवान ने कहा है, मुझको भी सुहाता है ये बंधन कभी-कभी। सो तुम्हीं निराकार, साकार होकर शरीर के बंधन में आई हो पर फिर भी मायापति हो, शरीररहित हो। Man is image of God. दुनिया की जिसको चाह नहीं राह में उसके रूकावट नहीं। मुझे बंधन काटना है यह चिंतन नहीं करना है। पर मैं मुक्त हूं,आत्मा हूं यह निश्चय करना है।

divinepramilabhagwan.com